P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

1857 के विद्रोह में कुंवर सिंह का आजमगढ़ अभियान

सुधाकर लाल श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
दी0द0उ0गो0वि0वि0,
गोरखपुर, उ.प्र., भारत

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 1857 का विद्रोह सबसे सशक्त उपनिवेश विरोधी विद्रोह था। इस विद्रोह में कुछ अग्रणी नायकों में कुंवर सिंह की गणना अतुलनीय है। जगदीशपुर के पैतृक निवासी कुंवर सिंह का जन्म 1777 में हुआ था। 80 वर्ष की वृद्धावस्था में भी उनमें अपूर्व जोश था, 8 सितम्बर 1857 ई0 को उनके पौत्र वीर भंजन सिंह तथा 7 नवम्बर 1857 को उनके पुत्र दलभंजन की मृत्यु के बाद उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध स्वयं नेतृत्व का फैसला किया। यद्यपि ब्रिटिश अभिलेखों पर आश्रित साम्राज्यवादी इतिहास लेखकों का मानना है कि कुंवर सिंह का पटना के कमिश्नर मिस्टर डब्लू0 टेलर से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध था किन्तु उन पर 13 लाख रूपये का कर्ज हो गया उनके पास उसका ब्याज चुकाने का भी पैसा नहीं था, उनकी जमीन्दारी खत्म होने वाली थी अतः उन्होंने विद्रोह का मार्ग अपनाया। कमिश्नर टेलर ने उन्हें साधनहीन बताया और यह भी कहा था कि वे सिर्फ नाम मात्र के जमीन्दारी के मालिक है। डब्लू टेलर के बाद नियुक्त कमिश्नर सै मुअल्स ने कुवंर सिंह के विद्रोह का कारण आर्थिक तंगी के कारण बताया है परन्तु अन्य स्रोतों के अनुसार कुवंर सिंह को फांसी होने वाली थी उन्होंने अपने ग्रामीणों को एकत्रित कर यह कहा कि वे एक डोम के हाथों मरना नही चाहते है।[1] अतः कुवंर सिंह की बगावत पूर्व नियोजित थी। वे शाहाबाद के राजपूती शौर्य प्रदर्शन में सम्मिलित हो चुके थे।

मुख्य शब्द : 1857 की क्रांति, कुंवर सिंह, आजमगढ़ अभियान।

प्रस्तावना

कुंवर सिंह ने 1857 के विद्रोह के समय आरा में अपनी स्वतंत्रत व्यवस्था स्थापित कर दिया था, उनके नेतृत्व में 28 जुलाई 1857 को अंग्रेजों पर छिपकर आक्रमण किया गया। जिसमें कैप्टन डनबर सहित लगभग सैकड़ों सैनिक मारे गये थे।[2] कुवंर सिंह की बहादुरी और उनके नेतृत्व से प्रभावित होकर आजमगढ़ के विद्रोहियों ने कुंवर सिंह के पास जाकर आजमगढ़ में अंग्रेजो से मुकाबला करने के लिए अनुरोध किया, कुवंर सिंह ने इस कार्य को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

अंग्रेज सेनापति विसेन्ट आयर ने कुंवर सिंह को निरन्तर दो युद्धों में पराजित कर उनके गढ़ जगदीशपुर को नष्ट कर दिया था। अपनी मातृभूमि से वंचित कुंवर सिंह रोहतास, मिर्जापुर, रीवा, बांदा होते हुए पश्चिम की ओर बढ़े। 19 अक्टूबर को कुंवर सिंह ने बांदा से काल्पी एवं 7 नवम्बर को काल्पी से ग्वालियर के क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया और कानपुर की ओर चल दिये।[3] वहां नाना साहब से मिलकर संयुक्त रूप से कन्धपुर नामक स्थान पर अंग्रेजों से युद्ध किया परन्तु अंग्रेजी शक्ति के सम्मुख सफलता नहीं मिली अतः कुंवर सिंह लखनऊ चले आये, अवध के नवाब ने उन्हें सम्मानित करने के लिए खिलअत प्रदान किया तथा आजमगढ़ जनपद के लिए एक फरमान और युद्ध खर्च के लिए 12000/–रूपये दिये, इसके अतिरिक्त 16000/–रूपये की एक हुण्डी भी राजा मान सिंह से भुगतान प्राप्त करने के लिए दी गयी, इसके बाद कुंवर सिंह आजमगढ़ की ओर बढ़े, उनके साथ फरवरी 1858 तक 2000 विद्रोही सैनिक अयोध्या में सम्मिलित हो चुके थे।[4] आगे बढ़कर उन्होंने फैजाबाद से 9 मील दूर अमरोहा के पास बेलवा नामक स्थान पर 14000 की विद्रोही सेना संगठित किया, जिसमें कई दल शामिल थे। इसमें सुल्लानपुर का नाजिम मेंहदी हसन भी था, वह आजमगढ़ पर आक्रमण करने के प्रयास में था, 5 मार्च 1858 को अंग्रेजी सेना ने विद्रोही सेना पर आक्रमण कर दिया फिर भी विद्रोही दृढ़ता से आगे बढते गये।

आजमगढ़ की सीमा पर अवध राज्य में विद्रोहियों की गतिविधियों से उत्पन्न विस्फोटक स्थिति वृद्ध कुंवर सिंह के पूर्णतः अनुकूल थी, क्योंकि अंग्रेजी सेना गोरखा सेना के साथ लखनऊ चली गयी थी। इसी का लाभ उठाकर कुंवर

सिंह सेना सहित अतरौलिया पर टूट पड़े, कुंवर सिंह आजमगढ़ और बनारस पर अधिकार कर कलकत्ता, लखनऊ तथा दिल्ली के बीच के संचार मार्ग को अवरूद्ध कर देना चाहते थे। अतः आजमगढ़ के जमींदारों, राजपूतों तथा पठानों को एकत्रित कर अतरौलिया का घेरा डाला।[5] इस समय कुंवर सिंह के पास 5 से 6 हजार के बीच सैनिक तथा गुलाम हुसेन के पास कुछ तोपें थी।[6] दूसरी ओर आजमगढ़ में मिलमैन के नेतृत्व में 37वीं पलटन के 286 और चौथी मद्रास अश्वारोही सेना के 60 सैनिक तथा 2 बन्दूकें थी। मिलमैन आगे बढ़कर कोयलसा में पड़ाव डाल दिया, कुंवर सिंह की सेना से वह भयभीत था, अतः अतरौलिया की ओर बढ़ा, 22 मार्च 1858 को उसने अतरौलिया पर आक्रमण कर दिया[7] काफी वीरता और साहस से लड़ने के बाद भी कुंवर सिंह की सेना पीछे हटने लगी, जब विद्रोही काफी दूर हट चुके तो अंग्रेजों ने अनुमान लगाया कि कुंवर सिंह हार मानकर मैदान छोड़ चले गये अतः मिलमैन ने अपनी सेना को विश्राम करने का आदेश दे दिया। विजय के उल्लास में सैनिक जुट गये इस स्थिति और शत्रुओं की गतिविधि देख कुंवर सिंह अचानक शत्रु पर टूट पड़े, मिलमैन को बाध्य होकर पीछे हटना पड़ा, उसके कुछ सैनिक मारे गये, इस भगदड़ में तोप, गोला, बारूद आदि कुंवर सिंह के हाथ लगे, कुंवर सिंह ने कोयलसा तक अंग्रेजों का पीछा किया, विजय के उल्लास में कुंवर सिंह अतरौलिया से आजमगढ़ पहुंच गये।

अंग्रेजों के इस पराजय का समाचार इलाहाबाद में लार्ड कैनिंग को मिला तो उसने तुरन्त लार्ड मार्ककर के साथ इलाहाबाद की 13 नं0 गोरी सेना को तोपखाना आदि सहित बनारस होते हुए इसे आजमगढ़ भेजा, इसी बीच कर्नल जेम्स गाजीपुर से 150 बनारस से 40 मद्रासी एवं 150 गोरे सैनिकों को लेकर आजमगढ़ में मिलकैन की सहायता के लिए उपस्थित हुआ।[8] कुंवर सिंह विद्रोहियों के साथ आजमगढ़ में स्वाधीनता का झण्डा फहराने अतरौलिया से आगे बढ़ने लगे, कर्नल डेम्स के नेतृत्व में सेना पश्चिम की ओर बढ़ती जा रही थी। आजमगढ़ से 4 मील पश्चिम सेहदा नामक ग्राम के निकट विद्रोहियों और अंग्रेजी सेना में घमासान युद्ध हुआ।[9] डेम्स आगे बढ़ता गया, कुंवर सिंह को पीछे हटना पड़ा, ज्यों ही सेना सिलनी नदी के निकट पहुंची कुंवर सिंह ने गिरिया ग्राम के उत्तर ओर तथा सिलनी नाले के तरफ अपनी सेना भेजकर अचानक अंग्रेजी सेना पर हमला बोल दिया, दोनों सेनाओं में संघर्ष हुआ, कर्नल डेम्स की सेना बिखर कर आजमगढ़ किले में जाकर छिप गयी, कुंवर सिंह ने डेम्स का पीछा करते हुए 26 मार्च को आजमगढ़ पर अधिकार कर लिया। कुंवर सिंह ने स्थानीय किले को घेर कर गोले बरसाना प्रारम्भ कर दिया परन्तु इसी समय गाजीपुर के कलेक्टर ने 150 सैनिकों की टुकड़ी भेजी और 27 मार्च को 37वीं गोरी सेना 200 अश्वारोहियों की सहायता से विद्रोही सेना पर आक्रमण कर दिया परन्तु असफल रही। 11 सैनिकों के साथ कप्तान बेड फोर्ड मारे गये।[10] अतः बनारस के कमाडिंग अफसर विग्रेडियर गार्डन ने रक्षा के लिए एक सैनिक टुकड़ी और 15 दिनों के लिए रसद तथा गोला बारूद भेजा।

कुंवर सिंह अंग्रेजों की रसद सामग्री की सहायता रोकने के उद्देश्य से बनारस की ओर बढने लगे, अतः अंग्रेजों ने इलाहाबाद स्थित लार्ड कैनिंग को इसकी सूचना दिया। कैनिंग कुंवर सिंह की कार्य क्षमता से परिचित था उसे आशंका थी कि बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, कलकत्ता के मार्ग बन्द हो जायेंगे, अतः कैनिंग ने क्रिमिया युद्ध के विजेता लार्ड मार्ककर को सेना और तोपों के साथ आजमगढ़ पर अधिकार करने के लिए आदेश दिया। लार्ड मार्ककर 22 अफसरों 444 सैनिकों तथा गोला बारूद तोपखाने के साथ 2 अप्रैल को बनारस पहुंचा और आजमगढ़ के करीब सरसेना नामक स्थान पर रात्रि विश्राम के बाद 6 अप्रैल 1858 को आजमगढ़ के पास पहुंचा। कुंवर सिंह ने मार्ककर की सेना का सामना करने के उद्देश्य से एक छोटी टुकड़ी बनारस मार्ग पर स्थित एक पुल पर मार्ककर को रोकने के लिए भेजा। शेष सेना के साथ कुंवर सिंह अंग्रेजों को धोखा देने के उद्देश्य से गाजीपुर की ओर बढ़े।[11] कुवंर सिंह के साथ अंग्रेजी सेना को पुल पार न होने देने के लिए पुल तोड़ने को प्रारम्भ कर दिया परन्तु शीघ्र ही गोरी सेना के आगे विद्रोहियों को पीछे हटना पड़ा अतः विद्रोही दल कुंवर सिंह के पास चला गया। मार्ककर को पता चल गया कि विद्रोही छिपकर आक्रमण की प्रतीक्षा में है, अतः अपने अश्वारोहियों को युद्ध सामग्री ले आने वाले ऊंट बैलगाड़ी तथा हाथियों के आ जाने तक उनकी सुरक्षा के लिए रोक दिया और शेष सैनिकों के साथ विद्रोहियों पर अनवरत प्रहार करने लगा, परन्तु कुंवर सिंह ने अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर उसे पीछे हटने को बाध्य कर दिया कुंवर सिंह की वीरता और कुशलता के परिणामस्वरूप मार्ककर को पराजित होकर युद्ध स्थल छोड़ आजमगढ़ की ओर भागना पड़ा। कुंवर सिंह ने अंग्रेजी सेना का पीछा किया अंग्रेजी सेना किले के अन्दर छिप गयी। कुंवर सिंह की सेना ने किले को घेर लिए, खाद्य सामग्री के अभाव में अंग्रेजी सेना व्याकुल होते गये इस युद्ध में अंग्रेजी सेना के कैप्टन जौन्स तथा 25 सैनिक और विद्रोही सेना के 52 सैनिक मारे गये। 29 मार्च 1858 को लुगार्ड के नेतृत्व में एक बहुत बड़ी सेना लखनऊ से आजमगढ़ के लिए भेजी गयी।[12]

अंग्रेजों के बढ़ते दबाव को देखकर कुंवर सिंह जगदीशपुर जाने का निश्चय किये परन्तु कुंवर सिंह यह भी जानते थे कि अंग्रेज पराजित गोरी सेना की सहायता के लिए अवश्य आयेगी। अतः जगदीशपुर जाने का विचार छोड़कर लुगार्ड का सामना करने के लिए मुख्यदल के साथ पुल के निकट छिपकर इंतजार करने लगे। लुगार्ड की सेना में 900 सिक्ख तथा 18 बन्दूकें थी, उसने जौनपुर होते हुए 15 अप्रैल 1858 को आजमगढ़ से 7 मील दूर पुल के निकट डेरा डाल दिया। कुंवर सिंह ने लुगार्ड का सामना करने के लिए कुछ विद्रोही सेना को पुल के पास भेजा और स्वयं मुख्य दल के साथ टोंस नदी के पुल पर डटे रहे। 16 अप्रैल को पुल पार करती लुगार्ड की सेना पर कुंवर सिंह के वीर सिपाही टूट पड़े, दोनों सेनाओं में भयंकर संघर्ष, हुआ अंग्रेजी सेना भागने पर मजबूर हो गयी।[13] कुछ समय बाद अंग्रेजों ने दूसरी बार पुल पार करने का प्रयास किया, विद्रोही सेना आगे बढ़ने

लगी दोनों सेनाओं में कड़ा संघर्ष हुआ इस संघर्ष में अंग्रेजी सेना की सफलता से कुंवर सिंह आजमगढ़ नगर छोड़कर बड़हलगंज मार्ग की ओर चले गये, लुगार्ड ने ब्रिग्रेडियर डगलस को कुंवर सिंह का पीछा करने के लिए सेना भेजा और आजमगढ़ रूका रहा। कुंवर सिंह सेना को दो भागों में विभाजित कर एक भाग के साथ बढते हुए शाहगढ़ के पास मुड़कर बगहीडाड़ की तरफ बढ़े। आजमगढ़ से 12 मील दूर तक निरंतर पीछा करते हुए डगलस की सेना को कुंवर सिंह के सैनिकों ने बगहीडाड़ में घेर लिया यहां भीषड़ संघर्ष हुआ, बेनीबुल और लेफ्टीनेंट हेमिल्टन गंभीर रूप से घायल हुये और उनकी मृत्यु हो गयी, अंग्रेजी सेना के 25 और विद्रोहियों के 70 लोग मारे गये, डगलस आजमगढ़ भाग गया।[14] इस बीच डगलस की सहायता के लिए अंग्रेजों द्वारा एक अतिरिक्त दल भेजा गया उसने कुंवर सिंह का पीछा किया कुंवर सिंह आजमगढ़ की ओर चले गये।

बेनीबुल के निधन के साथ आजमगढ के कार्यवाहक मजिस्ट्रेट आर0 डेविस को सिविल अफसर के रूप में डगलस की सेना के साथ सम्बद्ध कर दिया गया। लुगार्ड के आजमगढ़ पहुंचने के पूर्व 13–14 अप्रैल की रात्रि में कुंवर सिंह के सहायक निशान सिंह के साथ 2000 विद्रोही सैनिक 2 हार्स आस्लिरी तोपों सहित आजमगढ के लिए प्रस्थान कर चुके थे।[15] उन्होंने तहसील और थाने के सरकारी अभिलेखों को जला दिया, नगर के महाजन बेनी प्रसाद के छिपाए 72000/–रूपये प्राप्त कर लिया।[16] अंग्रेजी सेना बगहीडाड़ से सगड़ी होती मेथई पहुंची यहां पहले से एकत्र मेथई के बाग में कुंवर सिंह के सैनिकों ने मुहतोड़ जवाब दिया और छापामार युद्ध की नीति अपनायी। डगलस को पीछे हटना पड़ा, 17 अप्रैल को मेथई में सेना सहित रात्रि व्यतीत करने के बाद 18 अप्रैल को कुंवर सिंह सेना सहित गंगा की ओर बढते हुए घोषी पहुंचकर वहां की तहसील में आग लगाने के बाद तीव्र गति से नगरा होते हुए सिकन्दरपुर पहुंचे, वहां थाना और एक नील की फैक्ट्री को जला दिया। डगलस भी कुंवर सिंह का पीछा करते हुए सिकन्दरपुर होते मनियर पहुंचा और आक्रमण कर दिया, इस युद्ध में कुंवर सिंह के कुछ गोला बारूद एवं रसद डगलस के हाथ लग गये। कुंवर सिंह ने अपनी सेना कई भागों में बांट दिया, अतः सभी का पीछा करने में डगलस अफसल रहा। कुंवर सिंह की सभी टुकड़िया सहतवार नामक स्थान पर आपस में मिलकर रात्रि में ही गंगा किनारे शिवपुर घाट की ओर बढने लगी। शिवपुर के ठाकुरों ने कुंवर सिंह का स्वागत कर 20 नावों की सहायता प्रदान किया।[17] आजमगढ़ से कुंवर सिंह के जाने के बाद भी विद्रोह की अग्नि जलती रही।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध पत्र का मुख्य अभिप्राय आजमगढ़ जनपद में 1857 में होने वाले प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के लिए विद्रोही प्रकृति एवं उसके विद्रोही कार्यो पर प्रकाश डालना है, जो कंपनी सरकार की आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक नीतियों, राजस्व नीति, शोषण एवं अन्यायपूर्ण क्रिया–कलापों के कारण व्यापक असंतोष के रूप में 1857 में प्रस्फुटित हुयी और आजमगढ़ की जनता के विद्रोही नेताओं को अपने समर्थन से इतिहास में नाम अमर कर दिया।

निष्कर्ष

अंग्रेजों ने आजमगढ़ के विद्रोहियों की सम्पत्ति को जब्त कर अपने समर्थकों में बांट दिया, माहुल के राजा सैय्यद इरादतजहां का तालुका शम्साबाद जब्त कर लिया गया। उन्हें माहुल में फांसी दी गई। कुंवर सिंह की सेना को सहायता पहुंचाने के आरोप में तहसील घोषी के दुबारी ग्राम निवासी हरख सिंह, हुलास सिंह और विद्रोही सैनिक बिहारी सिंह की सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। ग्राम मोहम्मदपुर तहसील मुहम्मदाबाद के निवासी जगबन्धन सिंह, रामगुलाम सिंह, हरिद्वार सिंह, कुंजन सिंह, सहनू सिंह, अमर सिंह, भैरव सिंह, प्रताप सिंह, मोतीलाल को राजकीय कोष लूटने के आरोप में बन्दी बना लिया।

अंत टिप्पणी

1. *एस0एन0 सेन : एट्टीन फिफ्टी सेवन, सूचना विभाग नई दिल्ली भारत सरकार, पृ0सं0–301।*
2. *सैय्यद मोईन मुल हक : द ग्रेट रिवोल्यूलेशन आफ 1857 कराची पृ0सं0–311*
3. *आजमगढ़ पर्सियन रिकार्ड डिप्टी कमिश्नर जालौन, डिप्टी मजिस्ट्रेट जालौन द्वारा प्रेषित आख्या काल्पी 3 जून 1858 पैरा 9 में उद्धृत द्वारा रिवजी सैय्यद अतहर अब्बास : संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियां, पृष्ठ–166।*
4. *फ्रीडस स्ट्रगल इन यू0पी0 खण्ड–4 पृष्ठ–436*
5. *मजूमदार आर0सी0 : हिस्ट्री आफ दी फ्रीडम मूवमेन्ट इन इंडिया खण्ड–1, पृष्ठ–214*
6. *फ्रीडम स्ट्रगल इन यू0पी0 खण्ड–4, पृष्ठ–109*
7. *दत्ता के0के0 : बायोग्राफी आफ कुंवर सिंह एण्ड अमर सिंह, पटना 1957 पृष्ठ–143*
8. *होम्स टी0आर0 : हिस्ट्री आफ दी इण्डियन म्यूटनीज लन्दन 1904 पृष्ठ–453*
9. *सिंह ठाकुर प्रसाद : स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ–5*
9. *फ्रीडम स्ट्रगल इन यू0पी0 खण्ड–4 पृष्ठ–196*
10. *मिश्र जगन्नाथ प्रसाद : बिहार केसरी बाबू कुंवर सिंह पृष्ठ–52*
11. *फ्रीडम स्ट्रगल इन यू0पी0, खण्ड–4 पृष्ठ–193*
12. *मिश्र जगन्नाथ : पूर्वोद्धृत पृष्ठ–52*
13. *फा0डि0 एन0 डब्लू0पी0 नरे0 (एवे0प्रो0) नरेटिव आफ इवेन्ट्स फार आजमगढ़ फार दी वीक एन्डिंग 18 अप्रैल 1858*
14. *पूर्वोद्धृत,*
15. *पूर्वोद्धृत,*
16. *फा0सी0कन्स0 28 मई 1858 फा0नं0–59 (राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली)*
17. *एन0डब्लू0पी0 नरे0 (एवे0प्रो0) नरेटिव आफ इवेन्ट्स फार आजमगढ़ फार दी एन्डिंग, 2 मई, 1858*